बुल फाइटिंग के शिकार मूक पशु

नरेन्द्र देवांगन

बुल फाइटिंग (सांडों की लड़ाई) के खिलाफ दुनिया भर में बड़ा आंदोलन खड़ा है। कुछ पशु प्रेमी, भारतीय पशु कल्याण बोर्ड और पशुओं के लिए काम करने वाली संस्था पीपुल फॉर एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (पेटा) आवाज़ उठाते रहे हैं। यह इस मायने में एक अनोखा खेल है कि इसके केंद्र में मौत प्रमुख है। आम तौर पर दिन चढ़ने से मौत के इस खेल का आगाज़ होता है और दिन ढलने पर खेल का अंत मौत से होता है। आज के कथित सभ्य समाज में भी यह खेल दुनिया के विभिन्न हिस्सों में खेला जा रहा है। एक सवाल तो यही है कि बुल फाइटिंग को खेल माना जाए या नहीं?

स्पेन से ले कर फ्रांस और भारत में महाराष्ट्र और तमिलनाडु समेत देश के अन्य हिस्सों में सांड व बैल की लड़ाई या बैलगाड़ियों की दौड़ पारंपरिक रूप से कराई जाती रही है। वैसे पिछले साल से सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे किसी भी खेल व प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया है। 2015 पोंगल का पहला साल रहा जब यह पारंपरिक खेल जल्लीकट्टू नहीं खेला गया। जल्लीकट्टू एक ऐसा खेल है जो तमिलनाडु समेत दक्षिण भारत के बहुत से ज़िलों में खेला जाता रहा है। जल्लीकट्टू दक्षिण भारत का लगभग 4 सौ साल पुराना पारंपरिक आयोजन है।

तमिलनाडु के 5 ज़िलों मदुरै, पुडूक्कोट्टई, थेनी, तंजौर और सालेम में पोंगल का त्यौहार बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस मौके पर मदुरै के आसपास के गांवों में फसल की कटाई के बाद बैलों व सांडों के सींगों में उपहार के तौर पर कुछ कीमती चीज़ें बांध कर उन्हें खुले मैदान में छोड़ दिया जाता है। चुनौती सांड के सींगों से उपहार निकालने की होती है। यही कारण है कि उपहार के लालच में लोग सांड व बैल के पीछे भागते हैं, लेकिन इस खेल को रोचक बनाने के लिए तमाम यत्न किए जाते रहे हैं। दरअसल, सांडों को छोड़ने से पहले इन्हें आक्रामक बनाने के लिए बहुत कुछ किया जाता है। इन्हें शराब पिलाई जाती है, कुछ दिन भूखे-प्यासे घुप अंधेरे में रखा जाता है।

इस त्यौहार पर खूब सट्टा खेला जाता रहा है बल्कि पोंगल के दौरान तो यह खेल कमाई के लिए एक 'व्यवसाय' का रूप धारण कर लेता है। इसके लिए बैल व सांडों की खास तरह की देशी नस्ल का चुनाव किया जाता है। उम्दा किस्म की नस्लों के बैलों और सांडों को इस खेल के लिए मैदान में उतारा जाता रहा है। मज़ेदार बात यह है कि दो-चार नहीं, बल्कि अलग-अलग चरणों में 250 से 300 तक बैलों को दौड़ाया या लड़ाया जाता है। ज़ाहिर है पोंगल से पहले और बाद में कई दिन तक चलने वाले जल्लीकट्टू उत्सव में हर साल कुछ लोग मारे जाते हैं और बहुत से लोग घायल भी होते हैं।

बहरहाल, हमारे देश में सुप्रीम कोर्ट ने 2014 में तमिलनाडु के जल्लीकट्टू अधिनियम 2009 को रद्द कर इस खेल पर प्रतिबंध लगा दिया है। गौरतलब है कि जल्लीकट्टू के आयोजकों को इसके लिए स्थानीय प्रशासन को 2 लाख रुपए का शुल्क देना पड़ता था और फिर प्रशासन जनवरी से ले कर मई तक आयोजन की अनुमति देता था। प्रतिबंध के बाद 2015 में पहली बार जल्लीकट्टू के बिना पोंगल बनाया गया। हालांकि पोंगल से पहले इस पर प्रतिबंध को ले कर विरोध प्रदर्शन हुआ।

जल्लीकट्टू खेल के तीन तरीके हैं। पहला तरीका है वायली वीराट्टू। इसमें सांड को खुले मैदान में छोड़ दिया जाता है और लोग तरह-तरह से उसे उकसाने का काम

करते हैं। इससे भड़क कर सांड लोगों के पीछे भागता है और लोग इसकी पीठ पर चढ़ कर सवारी करने या इसके सींग पर बंधे तोहफे को लेने की कोशिश करते हैं।

दूसरा तरीका है वादम मंजूवीराट्टू। इसमें सांड को 50 फुट लंबी रस्सी से बांध दिया जाता है। एक बार में 6 से 8 लोग एक साथ इसे अपने वश में करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए 30 मिनट का समय दिया जाता है।

तीसरा तरीका वाडी मंजूवीराट्टू है। इसमें सांड को 2 दिन से ले कर 24 घंटे तक एक अंधेरे कमरे में बंद रखने के बाद खेल की शुरुआत में उसे छोड़ा जाता है। छोड़ते ही लोग इसके पीछे सवारी करने के लिए भागते हैं।

मौत के इस खेल की शुरुआत किसी ज़माने में यूनान में हुई थी, लेकिन आज यह खेल स्पेन, पुर्तगाल और फ्रांस का बड़ा शगल है। स्पेन में तो इसे कला का नाम दे दिया गया है। स्पैनिश मानते हैं कि यह महज एक खेल नहीं बल्कि प्राचीन कला है। गौरतलब है कि बुल फाइटिंग को यहां का राष्ट्रीय खेल माना जाता है। क्षेत्रफल के आधार पर दुनिया के 51वें देश स्पेन में पर्यटन और खेती दो ही प्रमुख पेशे हैं। ज़ाहिर है बुल फाइटिंग से पर्यटन भी जुड़ा है। इस खेल को देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं और स्पेन की अर्थनीति में इसकी गिनती होती है। हालांकि स्पेन के कैटालोनिया प्रदेश में बुल फाइटिंग पर प्रतिबंध है।

बुल फाइटिंग के लिए सांड को तैयार करने की एक अलग प्रक्रिया है, जो कम से कम दस दिन पहले शुरू होती है। तैयारी के नाम पर सांड को तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं। मसलन, अखबार को गीला करके उसके कानों में ठूंस दिया जाता है। उसकी आंखों पर वेसलीन मल देते हैं, ताकि उसकी नज़र धुंधली हो जाए। नाक में रूई ठूंस दी जाती है, जिससे वह ठीक से सांस न ले सके। उसके पैरों में कॉस्टिक सोड़े का घोल मल दिया जाता है, जिससे उसका संतुलन बिगड़ा रहे और वह फिसल कर गिरता-पड़ता रहे। उसे कई दिन तक ड्रग्स भी दी जाती हैं। बात यहीं तक होती तो गनीमत थी, हालांकि ये सब भी क्रूरता की चरम सीमा है, लेकिन बुल फाइटिंग के शौकीन इससे भी कहीं अधिक क्रूर होते हैं। सांड के यौनांग में सुई तक चुभोई जाती है। इतनी यातना देने के बाद 3 से 4 दिन तक उसे घुप अंधेरे में रखा जाता है, ताकि वह दिशाभ्रम का शिकार हो जाए।

स्विट्ज़रलैंड में बुल फाइटिंग के बजाय काऊ फाइटिंग का आयोजन होता है। बसंत के दिनों में स्विट्ज़रलैंड में वालिस की घाटी में इसका आयोजन होता है। यहां इसकी शुरुआत 1920 में हुई। इसे नाम दिया गया, 'दी फाइट ऑफ क्वींस'। यह खेल अंतर्राष्ट्रीय काऊ फाइट के रूप में जाना जाता है। बहुत सारे देश इसमें भाग लेते हैं। इसे देखने के लिए देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग आते हैं। इस फाइट में फ्रांस और स्विट्ज़रलैंड की लगभग सौ गायों को लड़ाया जाता है। गायों के सींगों को बोथरा कर उन्हें आमने-सामने खड़ा कर दिया जाता है। गाएं जी-जान से एक-दूसरे को अपने-अपने सींगों से पीछे धकेलने की कोशिश करती हैं। जो पीछे हट गई उसे खेल से बाहर कर दिया जाता है। अंत में जो गाय बच जाती है उसे 'क्वीन ऑफ दी क्वींस' का खिताब दिया जाता है। इस तरह की फाइट तुर्की और फ्रांस में कराई जाती है।

एशियाई देशों में भारत के अलावा बांग्लादेश, नेपाल, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में इस तरह के खेलों का आयोजन होता है। बांग्लादेश में भी सांड या बैल लड़ाने का खेल खेला जाता रहा है। हालांकि इसके लिए बाकायदा अलग से गाय, बैल और सांड की 'ग्रूमिंग' की जाती है। ऐसे बैल को खेती के काम में जोतने या बैलगाड़ी हांकने के काम में नहीं लिया जाता। मानसून से पहले गांवों में ढोल पीट-पीट कर सांड या बैल की लड़ाई देखने के लिए लोगों को इकट्ठा किया जाता है। खेल शुरू करने से पहले दर्शकों से पैसे भी वसूल किए जाते हैं।

बांग्लादेश में आज भी बुल फाइटिंग का खेल खेला जाता है। इसी तरह नेपाल में भी मकर संक्रांति पर बुल फाइटिंग का खेल होता है। नेपाल में इसे धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक आयोजन माना जाता है। जापान में सांडों की कुश्ती कराई जाती है, जो बुल सूमो कहलाता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान में मुर्गी और बकरी को लड़ाया जाता है। ***(स्रोत फीचर्स)***